अध्याय पाँचवा

उपसंहार

अध्याय पाँचवा

उपसंहार

सन् १९५२ में ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने विश्वनाथ त्रिपाठी के लेखन और निर्देशन में हिन्दी नाटक ' सीधा रास्ता ' में अभिनय किया । उस वक्त दर्शकों से जो तालियाँ मिली, उन्हीं तालियोंने आपके जीवन में उजाला कर दिया । आपने अधिकतरयुध्द नाटक ही लिखे हैं । देश प्रेम उनके मस्तिष्क में कूट-कूट भरा हैं । १९७२ के बाद दस साल तक वे फिल्मों की झूठी चमक दमक और ऊँची महत्वाकांक्षाओं की गलियों में भटकते रहें ।

' नेफा की एक शाम ' ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी का पहला सफल नाटक हैं । भारत में यही एक नाटक हैं, जिसके सारे भारत में पंद्रह सौ प्रदर्शन हो चुके हैं । इस नाटक को पाँच राज्य पुरस्कार प्राप्त हैं । ' माटी जागी रे ' प्रतिकात्मक नाटक हैं । उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत इस रंगमंचीय सामाजिक नाटक को तीन अंकोमें विभाजित किया है । ' वतन की आबरू ' अग्निहोत्रीजी का तीसरा नाटक हैं । प्रस्तुत नाटक भारत-पाकिस्तान के युध्द पर आधारित नाटक हैं । नाटक का नायक इलाही बख्श नामक एक मुसलमान हैं ।

' चिराग जल उठा ' यह ऐतिहासिक नाटक हैं । यह नाटक टीपू सुलतान के जीवन पर आधारित लिखा हैं । ' शुतुरमुर्ग ' एक व्यंग्यप्रधान प्रयोगवादी नाटक हैं । समकालीन राजनीतिपर किया हुआ व्यंग्यं, और जीवन के कटु सत्यों से पलायन करने की वृत्तिपर अद्वितीय प्रतीक नाटक हैं । यह नाटक

` अनुष्ठान ` नाटक में आत्मा की वापसी का अनुष्ठान दिखाया है। नाटककार की दृष्टि से आत्मा की वापसी अब भी संभावित है, जब तक मानव जीवन संभावीत है। ` दंगा ` नाटक में राष्ट्रीय एकात्मकता का प्रचार एवं प्रसार किया है। भारत अनेक धर्मोंका, अनेक जातियों का देश है। ऐसे सर्व धर्म समभाव इस तत्वपर चलनेवाले देश में कुछ देशद्रोही देश की अखंडता खंडित करना चाहते हैं। इसके साथ ही अग्निहोत्री जी ने झांकी और फिल्म लेखन भी किया है।

द्वितीय अध्याय में प्रतीक शब्द का अर्थ, प्रतीक का स्वरूप, प्रतीक की परिभाषाएँ, तथा प्रतीक के महत्व पर संक्षेप में विचार किया है। प्रतीक किसी अगोचर वस्तु का प्रतिनिधि है। जब किसी वस्तु का कोई एक भाग पहले गोचर होता है, और फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान होता है। तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं। प्रतीक द्वारा अप्रस्तुत वस्तु का बोध या परिज्ञान कराया जाता है। प्रतीक किसी वस्तु विशेष या भाव समूहों का ऐसा संकेत है, जो अगोचर एवं अतींद्रिय है। जिसका केवल मस्तिष्क द्वारा अनुभव किया जाता है। इस अध्याय में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की ` प्रतीक ` की परिभाषाओं को प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ प्रतीक की महत्ता प्रतिष्ठा की है। प्रतीक किसी भाव को कम-से-कम शब्दों में अधिक से अधिक प्रकट कर देता है। भारतेन्दु पूर्वप्रतीक नाटक, भारतेन्दु-कालीन प्रतीक नाटक, प्रसादयुगीन प्रतीक नाटक, प्रसादोत्तर प्रतीक नाटक, स्वातंत्र्योत्तर प्रतीक नाटक, आदि विषयोंका विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय में ` शुतुरमुर्ग ` नाटक की शिल्प एवं मंचीयता स्पष्ट करने का प्रयत्न रहा है। हिन्दी रंगमंच का प्रारंभिक रूप, हिन्दी रंगमंच का आरम्भ, व्यावसायिक रंगमंच, आज का हिन्दी रंगमंच, अव्यावसायिक रंगमंच, अभिनेता, वेशभूषा, दृश्य-सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, संगीत योजना,

शुतुरमुर्ग नाटक की शिल्प एवं मंचीयता आदि बातोंको स्पष्ट किया हैं। शुतुरमुर्ग नाटक की कथावस्तु, संवाद योजना, भाषा, चरित्र-चित्रण, अभिनेयता का भी विवेचन किया हैं।

चतुर्थ अध्याय में ` शुतुरमुर्ग ` नाटक की प्रतीकात्मकता स्पष्ट की है। ज्ञानदेव अग्निहोत्री जी को ` शब्द ` के सामर्थ्य का उन्हें पहले से पता था। ऐतिहासिक तथ्य को वर्तमान के साथ, अतिरिक्त प्रयास के बगैर जोडने की खुशी ` शुतुरमुर्ग ` को विशिष्ट स्थान देती हैं। ` शुतुरमुर्ग नाटक में स्वातंत्र्योत्तर भारत का पूरा राजनीतिक चित्र अत्यन्त मौलिक और रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत हुआ हैं। शुतुरमुर्ग के द्वारा ज्ञानदेव अग्निहोत्री नेहरू युग की राजनीतिक स्थितियों पर तीखी चोट करना चाहते हैं। देश की प्रगति के लिए बडी-बडी योजनाओं की निर्मिति मंत्रियों के झूठे वादे, झूठी उम्मीदें, निर्माण के दिखावे, समस्याओंका समाधान भी बनावटी और राजनीतिक षड्यंत्र का एक भाग हैं। जनता की जिन्दगी के साथ खिलवाड हैं। इसे प्रस्तुत करने के लिए ` शुतुरमुर्ग ` में एक ऐसे राजा, प्रजा, शुतुरनगरी, विरोधीलाल जैसे नाम बदलनेवाले मंत्री सब जगह मौजूद दिखेगा। शासक वर्ग देश की आर्थिक स्थिति तथा आन्तरिक संघर्षोंका सामना करने में असमर्थ होने के कारण सीमा संघर्ष का नारा लगाकर जनता का ध्यान मूल समस्या से दूर हटाते हैं।

शोध प्रबन्ध लिखने को प्रारंभ करने से पहले कुछ प्रश्न, कुछ समस्याएँ उत्पन्न हो गयी थीं। शोध प्रबन्ध पूरा करते वक्त उन सब प्रश्नोंका, समस्याओं का समाधान हो गया। उनको मैंने चार अध्याय में बाँटकर प्रस्तुत किया हैं।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटक

१) नेफा की एक शाम (१९६३)
उमेश प्रकाशन
५,नाथ मार्केट,
नई सड़क, दिल्ली-६
संस्करण छठा, १९७२

२) माटी जागी रे (१९६४)
प्रकाशक रामलाल पूरी
संचालक, आत्माराम एण्ड संस,
काश्मिरी गेट, दिल्ली-६
प्रथम संस्करण, १९६४

३) वतन की आबरू (१९६५)
प्रकाशक उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट,
नई सड़क, दिल्ली-६
संस्करण १९७४

४) चिराग जल उठा (१९६६)
प्रकाशक उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट
नई सड़क, दिल्ली-६
संस्करण १९७४

५) शुतुरमुर्ग (१९६८)
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन
प्रधान कार्यालय, ९ अलीपूर पार्क प्लेस
कलकत्ता
प्रथम संस्करण १९६८

६) अनुष्ठान (१९७२)
प्रकाशक ग्रंथम् प्रिंटिंग प्रेस
शाकेत नगर, कानपूर
संस्करण - जनवरी १९८३

७) दंगा (१९८४)
प्रकाशक साहित्य रत्नालय
३७-५० गिलिस्त बाझार
कानपूर २०८००
प्रथम संस्करण १९८४